परिवार के विस्तार के रूप में स्कूल

अनिल सिंह

मार्च 2020 में शुरू हुई लगभग दो साल की स्कूल तालाबन्दी और उसके बाद की स्वास्थ्य, रोज़गार और सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी चिन्ताओं ने हमारे समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। उन सबमें भी, बच्चे गम्भीर स्थिति में हैं क्योंकि उन्होंने ये सब चुपचाप देखा है और वे चिन्ताओं, अनिश्चितताओं और अभावों को झेलते आ रहे हैं। इस दौरान वयस्कों ने तो परिस्थितियों से निपटने के तरीक़े खोजे, लेकिन बच्चों के पास आमतौर पर कम ही विकल्प थे। बच्चों के लिए, स्कूल एक ऐसा स्थान है जहाँ वे दूसरे बच्चों के साथ बातचीत करते हैं, ख़ुद को अभिव्यक्त करते हैं, नए दोस्त बनाते हैं, रचनात्मक गतिविधियों में शामिल होकर नई चीज़ें सीखते हैं और एक उपलब्धि की भावना महसूस करने के अवसर प्राप्त करते हैं। ऐसा करते समय, वे अस्थाई रूप से अपने घरों और आस-पास के तनावपूर्ण माहौल से दूर हो जाते हैं, जो उन्हें किसी भी भावनात्मक संकट से बहुत हद तक उबरने में मदद करता है। सैद्धान्तिक रूप से यह एक अच्छा विचार लगता है, लेकिन व्यवहार में इसके प्रति स्कूली स्तर पर जागरूकता और संवेदनशीलता की बहुत आवश्यकता है।

हमें याद रखना चाहिए कि कमज़ोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले समुदायों के बच्चे अपनी बात अभिव्यक्त करने में भी संघर्ष करते हैं और इन परिस्थितियों में, शिक्षकों के प्रयास और उत्तरदायित्व बहुत बढ़ जाते हैं। यह बहुत अच्छा होगा यदि स्कूल भावनात्मक मदद के साथ-साथ आत्म-आश्वासन, प्रेम, सुरक्षा और अपनेपन की भावना को बढ़ावा दे सकें; जहाँ शिक्षक, एक वयस्क के रूप में, बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करके और उन्हें भरोसा देकर उनका सहयोग कर सकते हैं और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में ख़ुद की देखभाल करने में बच्चों की मदद कर सकते हैं।

हमारे स्कूल के अधिकांश विद्यार्थी झुग्गी-झोपड़ियों में रहते हैं। लॉकडाउन के दौरान कई लोगों की नौकरियाँ चली गईं। रोज़गार के लिए सबसे बड़ा उद्योग, भवन निर्माण सेक्टर, बन्द रहा। अपने दैनिक ख़र्चों को पूरा करने के लिए लोगों ने, उनके पास जो थोड़ी-बहुत बचत थी, उसका भी उपयोग किया; और वर्तमान में वे कर्ज़ के बोझ तले दबे हुए हैं जबकि उनकी आय कम ही बनी हुई है। इस सबका तनाव पूरा परिवार ही महसूस करता है। इन कठिन परिस्थितियों में बच्चों के साथ हमारे कुछ अनुभव हैं, और हम उन्हें स्कूल में किस तरह से मदद करने की कोशिश कर रहे हैं, इस बारे में आगे बात की गई है।

चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में बच्चे

महक नौ साल की बच्ची है। उसके पिता सफ़ाईकर्मी हैं। वे लगभग एक साल से बेरोज़गार थे। वे अपने परिवार के साथ कुछ महीनों के लिए गाँव वापस चले गए। लेकिन गाँव में भी बिना खेती-बाड़ी के लम्बे समय तक पूरे परिवार का भरण-पोषण करना मुश्किल था। शहर में कम-से-कम कुछ काम मिल जाता था तो वे वापस आ गए। अब हर रोज़ हर चीज़ की कमी रहती है। ख़ाने का ख़र्च कर्ज़ लेकर पूरा किया जाता है। कभी-कभार कोई काम मिल जाता है, लेकिन घर में हर समय अनिश्चितता और तनाव का माहौल बना रहता है।

जब स्कूल फिर से खुला तो महक आने लगी, लेकिन वह बहुत डरी हुई थी। उसका बाक़ी बच्चों के साथ घुलने-मिलने, खेलने और मस्ती करने का पहले का तरीक़ा बदल गया था। सुबह की संगीत सभा में, वह कुछ समय तक गाती रही, लेकिन उसका चेहरा उतरा हुआ था। हमने यह देखकर सोचा कि उससे बात करने की ज़रूरत है। हम तीन शिक्षकों ने इस काम को आपस में बाँट लिया। मेरा काम था कि मैं खेल के दौरान उससे बात करूँ और उसे उसकी भावनाओं और विचारों के बारे में बात करने का मौक़ा दूँ। एक अन्य शिक्षक अंकित ने उसके साथ बैठने और खाने की ज़िम्मेदारी ली। तीसरी अध्यापिका सोनम ने उसे कक्षा में अधिक भागीदारी करने में मदद करने की ज़िम्मेदारी ली। हमारे स्कूल में दिन की कक्षा प्रक्रिया और प्रत्येक बच्चे पर चर्चा करने के लिए हमारी दैनिक बैठक होती है। हम रोज़ाना इसका दस्तावेज़ीकरण भी करते हैं।

महक से बात करते हुए मुझे पता चला कि पिछली रात उसके घर में किसी ने ख़ाना नहीं खाया था। घर में ज़्यादा पैसे भी नहीं बचे थे। मैं मैदान में टहलते हुए उससे बातें करता रहा। मैंने मेरे परिवार के शुरुआती दिनों के संघर्षों के बारे में बात की। साथ ही, मैंने उससे कहा कि बुरा वक़्त बीत जाता है। उसने अपने दादा-दादी के बीच लड़ाई के बारे में बताया। मैंने

यह भी बताया कि मैं बचपन में नए कपड़े ख़रीदने या अपनी फीस भरने में सक्षम नहीं था। फिर हम लगभग हर रोज़ बात करते थे। अंकित कई बार अपना नाश्ता महक के साथ बाँटता था। हम अक्सर कई बच्चों को इकट्ठा करके सबका ख़ाना पूल करके उसे आपस में बाँटते थे। सोनम ने मुझे बताया कि महक ने कक्षा में पक्षियों और फूलों पर एक कविता लिखी। उसने इस कविता का एक पोस्टर भी बनाया और उसे कक्षा में लगाया।

15-20 दिनों के इस नियोजित काम के बाद, हमने महसूस किया कि महक लगभग अपने सामान्य रूप में वापस आ गई थी। वह न केवल अन्य बच्चों के साथ खेलती थी बल्कि कक्षा में भी सक्रिय रूप से भाग लेती थी।

हम जानते हैं कि महक केवल छह घण्टे स्कूल में रहती है और बाक़ी के 18 घण्टे उसे अपने परिवार के साथ रहना और उन्हीं मुश्किल हालात का सामना करना है। हालाँकि, इन छह घण्टों को भावनात्मक रूप से मददगार बनाने, बच्चों को उनके खोए हुए आत्मविश्वास को वापस पाने और उन्हें ख़ुद को बड़े समाज के हिस्से के रूप में देखने में मदद करने के लिए, हमें उनके प्रति जागरूक और संवेदनशील होना चाहिए। हो सकता है कि हम महक के जीवन में कोई स्थायी या प्रत्यक्ष बदलाव न ला पाएँ, लेकिन व्यक्तिगत रूप से ख़ुद की देखभाल करने और इस कठिन समय से निकलने में हम निश्चित रूप से उसकी मदद कर सकते हैं।

रोशनी 13 साल की है और झारखण्ड से भोपाल आई थी। वह हमारे स्कूल में तीन साल से है। उसके पिता ने पुनर्विवाह किया है और एक पेंटर के रूप में काम करते हैं। स्कूल खुलने के बाद जब रोशनी वापस आई तो काफ़ी कमज़ोर दिख रही थी। हालाँकि वह कभी भी बहुत स्वस्थ नहीं रही थी, लेकिन अब बार-बार अपने गाँव जाना, वहाँ खाने की कमी, वापस आना और घर में बन्द रहना, स्कूल से दूर रहना आदि कारणों से उसकी सेहत में और भी गिरावट आई है। स्कूल में गर्म, ताज़ा दोपहर का भोजन प्राप्त करना उसके लिए वास्तव में एक बड़ी बात थी। स्कूल आने के बाद से हमने उसके स्वास्थ्य में सुधार देखा और दिन में कम-से-कम एक बार सही ख़ाने के महत्त्व को समझा।

पहले रसोई चलाने में कई तरह की व्यावहारिक दिक़्क़तों को देखते हुए हमने इसे बन्द करने और अपना-अपना ख़ाना लाने का फ़ैसला किया था। फिर हमने महसूस किया कि कुछ बच्चों के लिए स्कूल का लंच एक बड़ी राहत है और इसे हर क़ीमत पर जारी रखा जाना चाहिए। हमें कई दानदाता मिल गए और हमने किचन को चालू रखा। रोशनी इस रसोई की सबसे बड़ी लाभार्थी थी, क्योंकि उसे ख़ाने की सख़्त ज़रूरत थी।

रोशनी केवल भोजपुरी बोलती थी। हमने उससे टूटी-फूटी भोजपुरी में बात करना शुरू किया। उसकी बहन अंकिता भी स्कूल आती थी। दोनों लगभग एक ही उम्र की थीं। वे बहनों से ज़्यादा दोस्त की तरह थीं। लेकिन उनके घर का माहौल अच्छा नहीं था। फिर सौतेले भाई का भी मामला था। जब माता-पिता काम के लिए बाहर जाते थे, तब उन्हें लम्बे समय तक उसके साथ रहना पड़ता था।

हालाँकि, वे नियमित रूप से स्कूल आ रही थीं लेकिन दैनिक गतिविधियों में भाग नहीं लेती थीं। यह ऐसा था मानो वे सब काम मशीनी तरीक़े से कर रही हों। हमने अपनी दैनिक बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा की। हमें पता चला कि वे घर का सारा काम कर रही हैं, लेकिन इस काम करने को कोई तवज्जो नहीं मिलती थी और न ही कोई इसका महत्त्व समझता था। उस दौरान हमने स्कूल में 'उमंग खेल मेले' का आयोजन किया और दो अन्य बच्चों के साथ रोशनी और अंकिता को पूरे कार्यक्रम के समन्वय का ज़िम्मा सौंपा गया। गणित के शिक्षक अंकित उनकी टीम में थे। और फिर कुछ जादू हुआ! अंकिता और रोशनी हमारे साथ हर दिन की गतिविधि की योजना बना रही थीं। वे बच्चों की टीमें चुन रही थीं, आवश्यक वस्तुओं की सूची बना रही थीं और सारा हिसाब-क़िताब रख रही थीं। दोनों ने साथ मिलकर इस तीन दिवसीय आयोजन के प्रत्येक दिन की रिपोर्ट लिखी।

हमने सुबह की संगीत सभा में रोशनी और अंकिता के काम की सराहना की। हमने सभी को बताया कि उनके माता-पिता काम पर गए होते हैं और अंकिता और रोशनी अपने छोटे भाई की देखभाल करने के साथ-साथ घर का सारा काम करती हैं, नियमित रूप से स्कूल आती हैं और इस सबके साथ उन्होंने इस कार्यक्रम का भी बख़ूबी संचालन किया। सभी ने उनके लिए तालियाँ बजाईं। स्कूल की ओर से नमिता ने उन्हें एक-एक कहानी की क़िताब दी। आने वाले दिनों में अंकिता हिन्दी में बेहतर हो गई और रोशनी गणित में अच्छा करने लगी। वे अगले साल कक्षा-9 में जाएँगी और उन्हें इस बात का दुख होता है कि उन्हें यह स्कूल छोड़ना पड़ेगा।

गोपाल 12 साल का है। वह पास की झोपड़ी में अपने दादा-दादी के साथ रहता है। उसके पास चार भैंसें हैं और वह अपने दादा-दादी के साथ दूध की एक छोटी डेयरी चलाता है। सुबह-सुबह अपनी भैंसों को चारा खिलाकर वह साइकिल पर दूध बाँटने जाता है और फिर स्कूल आता है। उसके माता-पिता गाँव में हैं लेकिन शायद कुछ पारिवारिक विवाद के कारण न तो वे और न ही गोपाल एक-दूसरे से मिलने जाते हैं। उसके दादा-दादी ही उसके लिए सब कुछ रहे हैं। महामारी के दौरान दादा का निधन हो गया। गोपाल के लिए यह सबसे कठिन समय था। स्कूल बन्द रहा। लेकिन खेल शिक्षक विजय और

मैं उससे नियमित तौर से मिलते रहे। जब स्कूल फिर से खुला तो वह घर और डेयरी का सारा काम करने के बाद स्कूल आने लगा। उसे 'स्कूली परिवार' की बहुत ज़रूरत थी। हमें भी ऐसा ही लगा। एक दिन हम सभी बच्चों के साथ उसकी डेयरी पर गए। हमने स्कूल की रसोई से ख़ाना लिया और सबने वहीं खाया। उसकी दादी भावुक होकर रोने लगीं। भरे गले से उन्होंने बुन्देली में कहा कि, "गोपाल अनाथ नहीं है; स्कूल उसका परिवार है।" उन्होंने सभी बच्चों को गुड़ दिया।

गोपाल के लिए परिवार की भरपाई करने के लिए कोई क्या कर सकता है? अगर स्कूल उसके साथ है और उसकी देखभाल करता है, तो गोपाल के लिए इतना ही काफ़ी है। गोपाल स्कूल में दूध देता है और उसका हिसाब रखता है क्योंकि यही उसकी रोज़ी-रोटी है। लेकिन हाँ, कभी-कभी वह मुफ़्त में छाछ लेकर आता है और स्कूल के किचन में उसकी कढ़ी बनती है और सब लोग मज़े से खाते हैं।

आनन्द निकेतन में हमारी सुबह की सभा बहुत सारे गानों और संगीत के साथ होती है, ताकि बच्चे अपने दिन की शुरुआत एक आनन्दमय, मुक्त और सहभागी वातावरण में कर सकें। बच्चों द्वारा अपने नज़रियों को सामने रखने के लिए दैनिक मंच सत्र, उनके दबे हुए विचारों और भावनाओं को सामने लाने और शिक्षकों को बच्चों के व्यक्तिगत जीवन के कई पहलुओं को समझने में मदद करने के लिहाज़ से काफ़ी हद तक सफल रहा है। शिक्षकों ने भी इस प्रक्रिया में समानता का माहौल बनाते हुए अपने विचारों को साझा करना शुरू कर दिया है। बच्चों को यह जानकर बड़ी राहत मिलती है कि उनके शिक्षक भी उनकी तरह सामान्य जीवन जीते हैं; उनके भी अपने डर, चिन्ताएँ और कमियाँ हैं और साथ मिलकर हम एक-दूसरे को भावनात्मक सहयोग दे सकते हैं। महक, रोशनी, अंकिता और गोपाल के मामलों में यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि इस स्कूल के माहौल और प्रक्रिया ने उनकी अत्यधिक मदद की।

*बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

अनिल सिंह पिछले 15 वर्षों से शिक्षा, विशेषकर स्कूली शिक्षा, के क्षेत्र में सक्रिय हैं। हिन्दी भाषा और सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के साथ-साथ वे रंगमंच को बच्चों के दैनिक कार्यों से जोड़ते हैं। कहानी कहने में उनकी विशेष रुचि है। कक्षा के अनुभवों और शिक्षा के अन्य मुद्दों पर उनके लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। वे आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल में शिक्षा के एक वैकल्पिक मॉडल से जुड़े रहे हैं। वर्तमान में, वे 'पराग' के साथ उसकी पेशेवर विकास सम्बन्धी पहलों में फैकल्टी के रूप में काम कर रहे हैं। उनसे *bihuanandanil@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : विवेक मलिक **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय